वेदों की खुशबू

ओ३म्

वेद सब के लिए

(धर्म मर्यादा फैलाकर लाभ दें संसार को)

VEDIC THOUGHTS

A Perfect Blend of Vedic Values And Modern Thinking

Monthly Magazine	Issue 32	Year 3	Volume 8	May 2015 Chandigarh	Page 24	मासिक पत्रिका Subscription Cost Annual - Rs. 100-see page 4

विचार

अध्यात्मिक चमक भी उतनी ही आवश्यक है

**नीद अपनी भूला के सुलाया हम को,
आंसू अपने गिरा के हंसाया हमको,
दर्द कभी न देना उन हस्तियों को,
खुदा ने मां बाप बनाया जिनको**

मातृ देवो भव, पितृ देवो भव––माता पिता को देवता के तुल्य समझो

जीवित माता पिता की सेवा ही श्राध है न कि उनके चले जाने के वाद पण्डितों को खिलाना।

अक्सर देखने में आया है कि जब हम किसी नोकरी के लिये अर्जी भेजते हैं तो उस में अपने बारे में सब कुछ अच्छे से अच्छा बताने की कोशिश करते हैं यही नहीं अपनी कमियों को या असफलताओं को जहां तक हो सके छुपाने की कोशिश करतें है। होता यह है कि जो भी हमारी अर्जी को पढ़ता है, अगर हमें जानता न हो तो काफी उंची राय बना लेता है और या तो हमें नोकरी दे देता है या फिर कम से कम साक्षात्कार (Interview) का मौका तो दे ही देता है। और जब साक्षात्कार (Interview) का मौका आता है तो अपने आप को बहुत चमका कर पेश करते हैं ताकी हमारे अच्छी बातें ही साक्षात्कार (Interview) लेने वाले को नजर आयें। यही सब कुछ बैंक से कर्जा लेते समय होता है। हम बैंक के आगे सब कुछ ऐसा पेश करते हैं कि बैंक को लगता है कि उनका पैसा कहीं जाने वाला नहीं। बहुत बे खूबी अपनी कमियों को छुपा लेतें है। और आज तो हाल यह है कि ऐसी ऐजेंसियां बनी हैं जिनको आपकी अर्जी को चमका कर पेश करने में मुहारित (expertise) है

Contact:
Bhartendu Sood, Editor, Publisher & Printer # 231, Sec. 45-A, Chandigarh 160047
Tel. 0172-2662870 (M) 9217970381,
E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

और उस के वे पैसे भी लेते है।

अब बात ले लिजिये महत्वपूर्ण व्यक्तियों से मिलने की या फिर कहीं दोस्ती या रिश्ते का हाथ बढ़ाने की । कोशिश यही होती है कि अपने आप को चमका कर पेश करें ताकी हमारा प्रभाव अच्छा पढ़े।

इस लिये क्यों न हम अपने आप को अध्यात्मिक रूप में वैसे ही चमकायें जैसे कि संसारिक बातों के लिये चमकाते है। पर इस में एक बात जो समझनी होगी वह है कि संसारिक बातों के लिये स्वयं को चमकाते हुये जिस प्रकार कई बार हम झूठ का और दिखावे का सहारा लेते हैं वह ईश्वर के आगे नहीं कर सकते क्योंकि ईश्वर तो सर्वज्ञ है, अर्थात सब के बारे में सब कुछ जानने वाला है। यह अध्यात्मिक चमक झूठ और आडम्बर के बिना होनी चाहीये जो कि तभी सम्भव है जब हम धर्म के गुणों को और ईश्वरीय गुणों को धारण करें न कि दिखावा मात्र हो।

पर इस से भी पहले कुछ व्यक्तियों के दिल में यह प्रश्न हो सकता है कि ईश्वर को साथ जुड़ने के लिये हमें अपने आप को अध्यात्मिक रूप से चमकानें की क्या आवश्यकता है? नोकरी वाला नोकरी देता है, बैंक वाला कर्जा देता है, बड़ा अफसर ओहदे में तरक्की दे सकता है, अच्छी तरह पेश होंगे तो नवयुवक को अच्छी लड़की जीवन साथी के रूप में मिल सकती है और ऐसे ही श्शादी योग्य लड़की को अच्छा लड़का मिल सकता है। ईश्वर से क्या मिलेगा ? तो इसका उत्तर यह है कि बाकी सब तो देंगें और वही देंगे जिसको देने के लिये ईश्वर ने उन्हें साधन बनाया है। पर ईश्वर ने तो पहले से ही बहुत कुछ दिया है। यह वायु, जल, अग्नि, सूर्य, फल–फूल व वनस्पति जिनके बिना जीवन सम्भव नहीं हैं, ईश्वर की कृपा का फल ही तो है। दूसरा जिस पर ईश्वर की कृपा है, सनिघ्य है, उसका जीवन का रास्ता सदैव आसान रहता है, वह काटों में भी फूलों की सेज महसूस करता है। उसे कभी यह नहीं लगता कि वह अकेला है, उसे यह लगता है कि एक बहुत वड़ी श्शक्ति उसके साथ है जो कि उसे गलत रास्ते पर नहीं जाने देगी, जो कि अच्छा जीवन जीने के लिये बहुत वड़ा बरदान है।

क्या फर्क है अध्यात्मिक चमक में और भौतिक चमक में?

जब हम अपने आप को भौतिक रूप से चमकाने में लगे रहते हैं तो भौतिक पदार्थो को पाने की प्यास और बढ़ती है जो कि बेचैनी को और मानसिक तनाव को जन्म देती है। पहले व्यक्ति मकान पाना चाहता है , फिर शानदार बंगले की इच्छा करता है , फिर फार्म हाउस की और फिर चाहता है एक नहीं उसके कई शानदार फलैट बंगले हों। तृष्णा और लोभ उसके साथी बन जाते है। और जब उसकी ईच्छाऐ उस रफतार से पूरी नहीं होती जिनकी वह अपेक्षा करता है तो वेचैनी और तनाव पैदा होता है। यह ऐसी चमक है जो कुछ देर में कम होने लगती है। इसके विपरीत जब व्यक्ति अपने में अध्यात्मिक चमक लाता है तो उस में सन्तोष, सहनशीलता आने लगती है। उसे लगता है कि जो भी मेंरे पास है वह बहुत है, जैसे मेरी आवश्यकता बढ़ेगी वह ईश्वर खुद साधन बना देगा। ईश्वर सम्पर्ण, उस ईश्वर में पूर्ण विश्वास, उसके जीवन का अंग बन जाते है। उस में यह सोच आ जाती है कि इस संसार की सब सम्पदा उस ईश्वर की है और यह मेरे लिये ही नहीं सब के लिये है। इसकी चमक या नशा कभी कम नहीं होता

आखरी पहलू है कि हम यह अध्यात्मिक चमक कैसे लायें?

आखरी पहलू यह है कि हम अध्यात्मिक तौर पर अपने आप को कैसे चमकाये ताकी ईश्वर हमें पसन्द करें, अपने भक्तों की श्रेणी में रखे और हम पर कृपालु हो।

(1) एक निराकार और अजन्मा ईश्वर को मानकर उस में पूर्ण विश्वास पहला कदम है। उसक बाद आती है ईश्वर की भक्ति, स्तुती और उपासना। ईश्वर भक्ति सिर्फ जाप नहीं बल्कि इश्वरिय गुणों को धारएा करने की लगातार कोशिश करना है। यह ईश्वरीय गुण है–––दूसरे प्राणियों पर दया और करूणा और सेवा की भावना, संवेदनशीलता अर्थात में दूसरों से वैसा ही व्यवहार करूं जैसा खुद से चाहता हूं। अगर मैं चाहता हूं कि कोइ भी वयक्ति मुझे मार कर अपना भोजन न बनाये तो मेरा भी कर्तव्य है कि मैं भी दूसरों को अपने भोजन के लिये न मारूं। उदारचित होना, सत्य के मार्ग पर ही चलना और दूसरों के साथ न्यायपूर्ण और धर्मानुसार व्यवहार।

(2) सत्संग अध्यात्मिक चमक लाने का सब से सुगम उपाय है। सत्संग के तीन उपाय हैं, अच्छे विचार वाले लोगों के साथ रहना और गलत लोगों की संगती से बचना, महात्मा और विद्वान लोगों के उपदेश प्रवचन सुनना और यदि यह सम्भव नही तो महान व्यक्तियों के जीवन को पढना। उदाहरण के लिये भगवान श्री रामचन्द्र, जो कि गुणों की खान थे, का जीवन रोज पढते रहें या सुनते रहें तो उनके गुण हमें प्रभावित करने लगेंगे और कुछ समय बाद हम यह कोशिश करेंगे कि हम में भी श्री रामचन्द्र, के गुण आ जायें। जब घरेलु सम्सयायें घेर लेती हैं तो अगर हम रामायण पढ़ते है तो हमारा ध्यान इस और जायेगा कि श्री रामचन्द्र का

आचरण ऐसे समय में कैसा रहा। पहले रामायण की कथा बहुत सादे ढ़ंग से मन्दिरों में होती रहती थी व व श्रधालु वहां आधा एक घंटा वैठ कर कथा सुन कर आते थे। पर आज मन्दिर जाने का अर्थ दो मिन्ट के लिये हाजरी लगाना व फटा फट ईश्वर से कुछ मांगना रह गया है। भक्ति तो भक्ति तभी है जब हम ईश्वरीय गुणों को उन महान व्यक्तियों के गुणों को धारण करें जिन्हें हम भगवान कहतें है। यही तो अध्यात्मिक चमक है। यदि हम ईश्वरीय गुणों को उन महान व्यक्तियों के गुणों को धारण नहीं करते है और केवल पाठ करतें हैं तो वह सिर्फ वाचक भक्ति होगी जो कि अध्यात्मिक चमक नहीं ला सकती।

यह भी बहुत आवश्यक है कि हम सत्संग के साथ जो हमारे में कमियां हैं और बुराईयां हैं उनका भी अध्यन करें और उन बुराईयों को दूर करने पर त्वजों दें। इसके लिये तप औ।र अभ्यास की आवश्यकता है। यदि हम तप और अभ्यास करते हैं जो कोई ऐसी बात नहीं कि ईश्वर की हमारे पर कृपा न हो। हमारे सामने बहुत से महान व्यकितयों के नाम हें जैसे ऋषि बाल्मिकी और स्वामी श्रद्धानन्द जिन्हं सत्संग ने ही उनकी बुराईयों का अवलोकन करवाया और बाद में तप और अभ्यास से उन्होने उन बुराईयों पर काबू पा लिया।

3 कल्याण मार्ग का पथिक बनना

ईश्वर उन्हीं को प्यार करता है और आत्मा तभी उन्नत होती है जब हम दूसरों के कल्याण के लिये अपने सामर्थय के अनुसार कुछ करते हैं। कल्याण मार्ग का पथिक वने बिना अध्यात्मिक चमक नहीं आ सकती । कल्याण मार्ग के पथिक होने का अर्थ है जो समाज मे हम से कमजोर है उनकी सहायता करना जाकी वे भी मानविय अधिकारों से वंचित न रहें। शायद आपने यह कहानी पढ़ी या सुनी होगी।

एक भक्त थे, बड़े प्रेम से ईश्वर को याद करते थे। एक दिन एक देवदूत आया, उसके पास नामों की दो सूचीयां थी। एक सूची में उनके नाम थे जो कि भगवान को प्यार करते थे। दूसरी सूची उन लोगों की थी, जिन्हे भगवान प्यार करता है। भक्त ने देवदूत से पूछा कि क्या उस का नाम पहली सूची में है? देवदूत ने कहा कि आप का नाम सूची में सब से उपर है। प्रसन्न होकर उसने फिर पूछा क्या दूसरी सूची में भी उसका नाम सब से उपर है? वह यह जानकर वहुत हैरान हुआ जब देवदूत ने बताया कि दुसरी सूची में उसका नाम बहुत नीचे था और उसके अमुक पड़ोसी का सब से उपर था। भक्त ने आश्चर्य के साथ कहा ––'' किन्तु वह तो भगवान का नाम लेता ही नहीं है। मैने उसे कभी संध्या, पूजा, भजन, कीर्तन करते हुए नहीं देखा। हां, वह दूसरों की सहायता करने, दूसरों के काम करने, बीमारों, गरीबों और दुखियों की सेवा करने में लगा रहता है।''

देवदूत ने कहा––'' यही कारण है कि भगवान उसे सब से अधिक प्यार करते हैं। जो भगवान के बन्दों को चाहता है, भगवान भी उसे चाहते हैं।

ऐसे लोग भागवान से क्या प्रार्थना करते हैं,

हे मेरे स्वामी, हे मेरे प्रभु, यदि आप मुझ से प्रसन्न हैं तो मेरी यह प्रार्थना है––'' मुझे राज्य नहीं चाहिये। मुक्ति का आन्नद नहीं चाहिये! एक ही इच्छा है मेरी कि दुखों से तपते हुए लोगों के **कष्ट दू**र हो जायें।

गीता में श्री कृ**ष्ण** कहते हैं कि अगर आप अनजाने में किये जा रहे पापों से बचना चाहते हैं तो दूसरों के लिये त्याग करें और परोपकार की भावना लायें। अगर आप स्वयं ही अपना कमाया धन भोगने लग पड़ेंगें तो याद रखीये भोग आप को भोगना शुरू कर देंगे और आप पापों से बच नहीं सकेगें और उन पापों का फल भोगना पड़ेगा।

कार विदेशी, हार्न भारत का

आपको यह जानकर शायद हैरानगी हो कि जो हमारे देश में बाहर के देशों से कारें आती है जेसे कि Mercedes Benz and Audi tweak , जिन्हें खासकर बहुत अमीर लोग ही प्रयोग करतें हैं, उनमें एक ही चीज भारत की होती है और वह है होर्न। कारण उन गाड़ियों में जो वहां के होर्न होते हैं वह भारत में 15 दिन भी नहीं चल सकते, हम इतना हार्न बजाते हैं। बड़ी बात यह है कि हम अपने को बदलना भी नहीं चाहते। हमारा कहना है कि हमारी अपनी ही महान सभ्यता है। जब सफाई की बात हो रही थी तो हमारे एक नेता ने तो यह कह कर सारी बात खत्म कर दी कि हर देश की सफाई की अपनी परिभा**षा है, पश्चिम वालों की अपनी है और हमारी सफाई की परिभाषा अपनी है।** आप ने जैसे पढ़ ही लिया होगा जहां तक खुश रहने की बात है, हमारा विश्व में 117 वां स्थान है। पाकिस्तान और बंगलादेश भी हमारे से उपर है। हम खुश क्यों नहीं हें क्योंकि हम ऐसी सभ्यता को बदलने के स्थान पर इसे और सशक्त करना चाहते है।

गीता में निष्काम कर्म का सन्देश

डा. महेश पोरवाल

मानव का पूरा जीवन कर्म से युक्त है। वह शरीर और मन से हर समय कुछ न कुछ करता रहता है। उसके हर कार्य का फल तो निश्चित है और अवश्य मिलता है पर यह नहीं कहा जा सकता कि कब और कैसे मिलेगा और किस रूप में मिलेगा। ऐसे में मनुष्य **को अगर कर्म फल सिद्धांत की जानकारी नहीं या ईश्वर पर पूर्ण विश्वास नही तो वह कर्म करता हुआ निराश भी हो सकता है। इसी कारण श्री कृष्ण ने निष्काम कर्म का उपदेश देते हुये कहा––हे मनुष्य तुझे** कर्म करने का अधिकार है। पर जहां तक तेरे कर्म के फल की बात है वह तू ईश्वर पर छोड़ दे और अपने कर्म में निश्चिन्त लगा रह, यही तेरा धर्म है।

मनुष्य और पशु कीट–पतंग आदी दूसरी योनियों में मुख्य फर्क यह है कि मनुष्य योनी कर्म योनी है वह पिछले कर्मा का फल तो भोगता है पर साथ में ही नये कर्म भी अपने विवके द्वारा करता है जब कि **पशु कीट–पतंग की योनी केवल भोग**

योनी है उनके लिये विवेके नाम की कोई चीज नहीं जो उन्हे यह बताये कि क्या ठीक है और क्या गलत है। **मनुष्य अ**पने नये कर्मो के द्वारा ही अपने भविष्य का निर्माण करता है। ऐसे में म**नुष्य को नये कर्म** करने की तो स्वतन्त्रता है पर वह अपने नये कर्मो द्वारा पुराने कर्मो के फल को नहीं बदल सकता अर्थात परतन्त्र है। इसका सीधा अर्थ यह है कि म**नुष्य को कर्म** करने की तो स्वतन्त्रता है पर फल प्राप्ती में परतन्त्र है। श्री कृष्ण कहते हैं कि हे मानव अगर तू फल की ईच्छा रखकर कर्म करेगा तो तू उस में बन्ध जायेगा।

यहां समझने वाली बात यह है कि कर्मफल का त्याग करने का तात्पर्य यह है कि हम कर्मफल की इच्छा तो करें पर उसके साथ आसक्त न हों। आसक्त होने का अर्थ है कर्म के फल के बारे में ही सोचते रहना और उसे ही सब कुछ मान कर चलना। यह सत्य है कि कोई भी व्यकित कर्मफल के फल की ईच्छा का त्याग नहीं कर सकता। हर व्यकित परिणाम की इच्छा करता ही है। उदाहरण के लिये विद्यार्थी जब परिक्षा देता है तो उसकी इच्छा होती है कि मैं सब से अधिक अंक लेकर उतीर्ण हो। इस में कुछ गलत नहीं। गलत तब है जब कि वह अपनी परिक्षा के परिणाम को सब कुछ मान कर उस के साथ आसक्त हो जाये। यदि उस के अंक सब से अधिक नहीं भी आते हैं तो उसे इस को ईश्वर की ईच्छा मान कर चलना चाहिये और बिना निराश हुये मेहनत करता रहे। यही है फल के साथ नहीं बन्धना। इसी तरह यदि हम फल मे आसक्त हो जातें हैं तो हम अपने गणत्वय पर पहुंचने के लिये गलत साधन भी अपना सकते हैं, जैसा की अक्सर होता है। श्री कृष्ण यही कहते हैं कि हे मानव तू फल की ईच्छा तो कर पर उस के साथं बन्ध न जा या आसक्त न हो।

कर्म फल को समझने के लिये हमें कर्मो को तीन श्रेणीयों में बांटना होगा

1 ऐसे कर्म जिन का फल तुरन्त मिलता है। जैसे भोजन किया तो तृप्ती का आभास और शरीर में उर्जा उसी समय आने लगती है।

2 ऐसे कर्म जिनका फल तुरन्त नहीं मिलता, संचित होता रहता है और भविष्य में इस जीवन में या अगले जीवन में कर्म के गुण के अनुसार मिलता है।

3 ऐसे कर्म जो हमने पहले कभी किये थे पर उनका फल अब भोग रहें हैं।

कर्मफल सिद्धान्त को मानने वाला बिना किसी गलत साधन

को अपनाये अपने कर्म में लगन, तन्मयता, बुद्धिमता और मेहनत से लगा रहता है यह सोचकर कि अच्छे कर्म का फल अच्छा ही होता है और यह फल आज नही तो कभी न कभी अवश्य मिलेगा। यही चीज हमारे कर्मो की पवित्रता का बनाये रखने में सहायता करती है।

कर्मफल सिद्धान्त को मानने वाला न तो असफलता में बहुत दुखी होता है और सफलता में न ही बहुत अधिक प्रसन्न। उसकी मानसिक स्थिती एक जैसी रहती है जो कि मन को शान्त रखने में बहुत सहायता करता है। कई बार बहुत से व्यक्ति धन, मान, प्रतिष्ठा के नष्ट होते ही या किसी कार्य प्रिक्षा में असफल होते ही दुख,श्शोक में बिमार होते, मानसिक सनतुलन खोते यहां तक आत्महत्या करते देखें गये हैं। ऐसा तभी होता है जब हम कर्मफल सिद्धान्त को नहीं समझते या मानते। इस के सामने, जो व्यक्ति कर्मफल के सिधान्त को मानते हैं वह भारी दुख और असफलता में भी विचलित नहीं होते। इसका सब से बड़ा उदाहरण है राजा हरिश्चन्द्र, राज्य के चले जाने, पत्नि के बिक जाने, पुत्र के मर जाने पर भी वह डगमगाये नहीं और डटे रहे।

आज के युग में फैली बहुत सी बुराईयां जैसे व्याप्त भ्रष्टाचार, हिंसा, अनैतिकता दूर हो जाये यदि हम इस कर्मफल के सिद्धान्त को जीवन में अपना लें।

सच्चा भक्त अपने आपको ईश्वर को अर्पण कर देता है

परमहंस श्री रामकृष्ण अपने जीवन के अन्तिम दिनों में गले के अन्दर कैंसर से रूग्ण हो गये थे। डाक्टरों ने काफी चिक्तसा की पर वह स्वस्थ नहीं हुये और रूगणता बढ़ती ही गई। कलकता के एक विद्वान शशीधर जो कि उनके भक्त भी थे, उनकी यह हालत देख कर दुखी थे और परमहंस से बोले––योगिराज! डाक्टर हार गयें है। अब केवल एक ही उपाय है कि आप तीन बार मां से प्राथना करें– ''मां मेंरी बिमारी दूर कर दो'' परमहंस उस समय ठीक से बोलने की हालत में नहीं थे। फिर भी कोशिश कर के बोले। मां सब जानती है। वह यह भी जानती है कि मेरे लिये क्या अच्छा है क्या बुरा। जो वह उचित समझेगी वही करेगी। मुझे उस से कुछ भी मांगने कि आवश्यकता नहीं। यही है सच्चे भक्त की पहचान वह अपने आपको ईश्वर को अर्पण कर देता है

पत्रिका के लिये शुल्क

सालाना शुल्क 100 रूपये है, शुल्क कैसे दें

1. आप 9217970381 या 0172–2662870 पर subscribe करने की सूचना दे दें। PIN CODE अवश्य दे
2. **आप चैक या कैश निम्न बैंक मे जमा करवा सकते हैं :–**
   Vedic thoughts, Central bank of India A/C No. 3112975979 **IFC Code - CBIN0280414**
   Bhartendu soood, IDBI Bank - 0272104000055550 **IFC Code - IBKL0000272**
   Bhartendu Sood, Punjab & Sindh Bank - 02421000021195, **IFC Code - PSIB0000242**
3. आप मनीआर्डर या at par का Cheque द्वारा निम्न पते पर भेज सकते है। H. No. 231, Sector 45-A, Chandigarh 160047.
4. दो साल से अधिक का शुल्क या किसी भी तरह का दान व अनुदान न भेजें। शुल्क तभी दें अगर पत्रिका अच्छी लाभप्रद व रूचिकर लगे।

यदि आप बैंक में जमा नहीं करवा सकते तो कृपया at par का चैक भेज दे।

सम्पादकिय

छोटे किसानों का अलग वर्ग हो

यदि हम चाहते हैं कि हमारे देश का छोटा किसान खुशहाल हो और सरकार द्वारा दिये जा रही सहायता उस तक पहुंचे तो यह बहुत आवश्यक है कि किसानों का वर्गीकर्ण किया जाये। आज हालत यह है कि एक बड़ा रातनैतिज्ञ, सरकारी अफसर या फिर बड़ा व्यापारी, यदि उसके पास कृषि वाली जमीन है तो वह भी किसान कहलाता है चाहे वह खेती करता हो या न करता हो। वस्तुतः स्थिती यह है कि पंजाब जैसे प्रान्त में 70% जमीन ऐसे ही लोगों के पास है कृ**षि** जिनका पेशा नहीं और कृ**षि से आ**ने वाली आय उनके लिये अतिरिक्त आय होती है। जब कि 30 %जमीन छाटे किसानों के पास है जिनकी संख्या बड़े किसानों से 10 गुणा है। ऐसे में उनका घर बार कृ**षि की आय पर ही चलता है और जब कोई प्राकृतिक आपति आ जाती है, जैसा अभी हाल में हुआ,** तो उनकी आर्थिक हालत डांवाडोल हो जाती है। जब कि बड़ी जमीन वालों की कृ**षि से** आय ऐसी विपदा आने पर चाहे घट जाये पर उनको खाने के लाले नहीं पड़ते क्योंकि उनके आये के दूसरे स्त्रोत होते है।

ऐसी हालत में जिनके पास भी 10 किले से कम जमीन है और जो किसी दूसरे व्यवसाय में नहीं हैं, असल किसान हैं, उनका अलग वर्ग बनाया जाये और जो भी सरकार सहायता देती है उस पर उनका पहला हक होना चाहिये। यही नहीं सरकार अनाज की खरीद इस वर्ग के किसानों से ही करे । जो बड़े किसान है उन से सरकार को खरीद बिल्कुल बन्द करनी चाहिये और उन्हें खुली मार्केट में बेचने की छूट होनी चाहिये। आज सरकार द्वारा खाद्यानों की खरीद भी इस मंहगाई का कारण है। हर साल कीमतें बड़ा कर सरकार खाद्यान खरीदती है जिस का बड़ा हिस्सा गौदामों में सड़ कर जाता है। अगर छोटे किसानों को इसका फायदा पहुंचे तब भी इस बात को स्वीकार कर लें, पर छोटा किसान तो आढतीयों से पहले ही कर्ज लिये होता है, ऐसे में सरकारी खरीद का फायदा इन इन वड़े जमिदारों को ही होता है। यही बात सरकार द्वारा दिये गये मुआवजों की है, बड़े किसान जो कि पढ़े लिखे और सरकार तक पहुंच रखते है, इस को लेने में सक्षम होते है, छोटे किसानों तक तो मुआवजे पहुंचते ही नहीं।

हम जानते हैं इन बड़े किसानों की लाबी बहुत सशक्त है, सरकार उनको नाराज नहीं कर सकती पर एक बात जो सरकार आसानी से कर सकती है वह है जिनके पास भी 10 किले से कम जमीन है, उनका सरकारी सहायता पर पहला हक हो । और अगर सरकार आम आदमी का भला चाहती है तो खद्याानों की सरकारी खरीद बन्द की जाये। दूसरा दो तीन साल तक खाद्याानों को मुश्किल समये के लिये गौदाम में रखने का कोई फायदा नहीं, वह खाने लायक नहीं रहते। यह देखा गया है कि खराब हालत में सालाना उपज में 10% का फर्क पड़ता है, ऐसे में 10% से उपर स्टोर करना बुद्धिमता नहीं। जब अधिक उपज हो निर्यात करो और जब कम हो तो आयात करो , यह गौदामों में रखने से कहीं अच्छा और कम खर्चीला है। **फोन न. 0172–2662870**

अगर आपको कुछ कहना है या पत्रिका subscribe करनी है
कृप्या निम्न address पर सर्म्पक करें
भारतेन्दु सूद, 231 सैक्टर– 45-ए चण्डीगड़.160047
0172.2662870, 9217970381, E mail : bhartsood@yahoo.co.in

The Lesson in 'dharma' Japanese taught in their moments of grief

Neela Sood

The recent earthquake in Nepal reminds me of similar earthquake Japan experienced four years back. The way Japanese conducted themselves in those moments of grief and crises is a lesson for every body and it showed their character. A few things which left an indelible impression on my minds are.

As a nation they refused to take aid from the outside world since they felt that they could manage on their own. When the relief items like food, clothing was being distributed to the affected; they not only made a queue but when somebody felt that the other was needier than him, he left his place for him. The foreign journalists were wonderstruck as they could not find even a single instance where the affected jostled to grab food packets or created ruckus to have as much as possible by denying to other deserving.

People deposited the valuables found at the affected area with the Police Station and what leaves one overwhelmed is that there were only genuine sufferers who approached to file claim and vast number of valuables remained unclaimed.

Average Japanese reduced his purchase of various house hold needs so that these were available to those who were affected. Can one believe that those who had to run outside for shelter when tremors struck, went back to clear their bills in restaurants and hotels once the situation had normalised. Japanese shopkeepers lowered the prices of the general utility goods at the expense of their own profit margin.

At one stage, it was felt that running of a few pumps to cool the nuclear reactors was absolutely essential. Fifty odd engineers risked their lives to set right the damaged pumps and operate them.

Agony of loss of kin and other things was visible on their faces but there was no attempt to tell to the world around them. .People showed strength of character by exercising patience, tolerance and the resistance in such moments of crises and confined their agony to themselves only.

The meaning of dharma is 'moral values or ethics' which regulate life, like truth, love, compassion, non-violence, forgiveness, patience, tolerance, cleanliness of self and the environment, to shun the tendency to hoard and righteous conduct., while these remain loaded in our scriptures and we do our bit by chanting and singing they showed by their actions. This is how Japan has time and again emerged like a phoenix from the ashes to command a place of pride in the world whether it is economy, technology, new innovations or wafare. **9217970381**

पत्रिका में दिये गये विचारो के लिए लेखक स्वयं जिम्मेवार है। लेखको के टेलीफोन न. दिए गए है न्यायिक मामलो के लिए चण्डीगढ़ के न्यायलय मानय है।

Publisher & Printer Bhartendu Sood **Printed at** Umang Printer, Plot No. 26/3, Ind. Area, Phase-II, Chd. 9815628590
Owner Bhartendu Sood **Place of Publication** # 231, Sector 45-A, Chandigarh 160047
Phone : 0172-2662870 (M) 9217970381 Name of Editor : Bhartendu Sood

बेटी बचाओ——केवल नारों से नहीं

हमें अपने रिवाज और व्यवस्था बदलनी होगी

नीला सूद

प्रधान मन्त्री नरेन्दर मोदी ने बहुत जोर शोर से बेटी बचाओ नारा दिया है। बहुत से लोग सोचते हैं कि केवल मात्र भ्रूण हत्या के विरूद्ध कड़े कानून बनाने से यह उदेश्य प्राप्त हो जायेगा। पर यह समस्या को खत्म नहीं कर सकता। आवश्यकता है उन कारणों के जानने की कि क्यों जनसाधारण बेटी के जन्म से खुश नहीं, क्यों उस को एक बोझ समझा जाता है और इस भ्रूण हत्या जैसे पाप को करने से भी व्यक्ति परहेज नहीं करता।

यदि हमने इस के कारण को समझ कर, सदियों से चल रही प्रथाओं को तोड़ कर एक नया रास्ता अखत्यार का लिया, तो कोइ ऐसा कारण नहीं कि लोग कन्याओं के जन्म से भी वैसे ही खुश हों जैसे कि बेटे के जन्म से होते है। यहां यह समझना आवश्यक है कि जो पहले की प्रथायें थी उनकी अपनी भूमिका थी पर इस तेजी से बदलते हुये समय में वह भूमिका बदल गई है।

मैं आप को विश्वास के साथ कह सकती हूं कि लडकी के माता पिता कभी यह नहीं महसूस करते कि लडकी के माता पिता होने के कारण वे किसी रूप में लड़के वाले से छोटे हैं, यह बात भारतीय समाज उन्हे तब महसूस करवाता है जब वह लड़की की शादी के लिये जाता है। इस सम्सया की जड़ है शादी जैसे पवित्र बन्धन को लेकर हमारे समाज द्वारा बनाये गये गलत रिवाज। आईये इसे समझें,

आज हमारे मध्यम और उच्च आये वर्ग की बेटियां भी वैसे ही पढ़ लिख कर नोकरी व्यवसाय कर रहीं हैं जैसे कि इन घरों के बेटें कर रहें हैं। लड़कियां भी डाक्टर, इंजिनयर, जज, निजी और सरकारी क्षेत्र में अफसर व कर्मचारी , प्रोफैसर, अध्यापक, I.A.S बन रही हैं जैसे की लड़के बन रहें हैं। जैसे लड़के के पढाने में खर्च आता है वैसे ही लड़की के पढ़ाने में भी। **लड़की मुफत में डाक्टर, इंजिनयर, MBA, जज, यां अफसर नहीं बन जाती, जैसे की कई व्यक्तियों की, खास कर जिनके लड़के ही होते है, सोच देखी गई है।**

अक्सर होता क्या है चाहे लड़की पढ़ कर कितने भी उंचे पद पर लगी हो, या कितना अच्छा वेतन लेती हो, लड़के वाले यह उमीद करते हैं कि उनके मनपसन्द venues में लड़की के माता पिता शादी और दूसरे सब सामारोह अपने खर्चे पर करें। एक और बात जो आजकल देखने में आई है कि लडका चाहे अपने पांव पर खड़ा होने के लायक न हो, अपनी होने वाली घरवाली को भी उसके कमाये बिना, पालने का सामर्थय न रखता हो, पर शौक उसके पांच सितारा होते हैं, चाहेगा कि उसकी शादी लड़की वालों के खर्च पर किसी पांच सितारा होटेल में हो। और अक्सर उसके माता पिता की सोच भी वैसे ही होती है क्योंकि वे सोचते है कि हम लड़के के माता पिता हैं और इस कारण हमारा हक है। चाहे हम यह कहें कि हम उन्नती कर गये हैं पढ़ लिख गयें हैं और अपने आप को प्रगतीशील बताने का ढोंग रचते हैं, पर सच्चाई यह है कि हमारी सोच अभी भी रूढ़ियों से प्रभावित है। कई बार लड़के के माता पिता यह कहते देखे जाते हैं —— '' देखिये हम दहेज नहीं चाहते, सिर्फ हम यह चाहतें है कि हमारे मेहमानों की अच्छी खतिर हो और उनका ख्याल रखा जाये, यह दहेज मांगना नही तो और क्या है। खतिरदारी क्या मुफत हो जाती है? हर होटल मैरेज पैलेस मे कम से कम 1000—1500 की पलेट आती है।

कई 3—4 अलग अलग functions समारोह चाहते है। रोका अलग, रिंग सैरेमनी अलग, चुनी चड़ाना अलग और शादी

सामारोह अलग और वह भी लड़की वालों के सिर पर। यहां यह समझना आवश्यक है कि पिछले समय में अगर सब रिवाज थे तो भूमिका बिल्कुत अलग थी। उस समय लड़कियों की शिक्षा न के बराबर थी, चाहे पढ़ी भी हो तब भी उस से यह अपेक्षा नहीं थी कि वह कमा कर घर को चलायेगी। माता पिता की जायदाद पर लड़कों का ही हक होता था इसलिये माता पिता उन्हे दहेज के रूप में अपने सामर्थय के अनुसार दे देते थे और बारात की खतिरदारी कर देते जो कि बहुत सादी होती थी। सब से बड़ी बात उस समय यह सब functions बहुत ही सादे और छोटे होते थे जैसे रोके का अर्थ था गुड़ की डली खिला कर रिश्ता पक्का कर देना पर आज कोई सितारा होटल कें बिना कुछ करना ही नहीं चाहता। पर फिर भी, उस समय लड़के वाले अपने सामर्थय और शौक के अनुसार अपने रिश्तेदारों के लिये अलग भौज Reception इत्यादि करते थे, वे लड़की वालों पर अधिक बोझ डालने के विरूद्ध हाते थे।

आज यह भूमिका बिल्कुल बदल गई है। लड़कियां भी पढ़ लिख कर डाक्टर, इंजिनयर, जज, निजी और सरकारी क्षेत्र में अफसर, प्रोफैसर, I.A.S बन रही हैं जैसे की लड़के बन रहें हैं। जैसे लड़के के पढाने में खर्च आता है वैसे ही लड़की के पढ़ाने में भी। बहुत बार लड़की लड़के से बेहतर तन्खा पा रही होती है या बेहतर औहदे पर लगी होती है। ऐसे में पुराने रसमों रिवाजों और रूढ़ियों के अनुसार यह अपे्क्षा करना कि लडकी वालों सब कुछ करें, न केवल गलत है पर बहुत घटिया सोच है। जो कि अब भी देखने को मिलती है। कई लड़के वाले तो इतने गिरे हुये और लोभी होते है कि अपने आप तो function समारोह के नाम पर कुछ नहीं करते ओर एक लम्बी चौड़ी फोज बारात के रूप में ले जाते हैं। यही नहीं सगुन gifts खुद इकठठा कर लेते हैं। ऐसे में लड़कियों के जन्म से कोन खुश होगा, उसे बोझ नहीं माना जायेगा तो क्या माना जायेगा। please pardon me for plain speak. But, somebody has to do this unpleasant task.

विडम्बना देखिये लड़की के माता पिता की, उनकी बेटी भी वैसे ही पड़ी लिखी है जैसे लड़का पढ़ा लिखा है, उतना ही कमाती है जैसे लडका कमाता है और जीवन भर उन्हें ही कमा कर देगी फिर भी शादी का बोझ लड़की के पिता पर डाला जाता है और गलत शर्ते डाली जाती है। पहले तो यह उमीद की जाती है कि अगर लड़की वाले दूसरे शहर से रहते है तो जहां लड़के वाले रहते हैं वहां आकर शादी करें। यह आसान नहीं होता। फिर उस venue में शादी करें जो लड़के वालों को ठीक लगे। लड़के वाले रिश्तेदारों की एक लिस्ट दे देते हैं कि इन सब को लड़की वाले कपड़े दें। पहले मिलनियां बहुत सादी होती थी पर आज मिलनी के समय भी यह उमीद की जाती है कि लड़की वाले लड़के वालों को तोहफें दे। जिस समाज में भी ऐसे हालात हों वहां कन्या के जन्म से आम व्यक्ति खुश नहीं हो सकता और भ्रूण हत्या रूकेगीं नहीं।

अगर पहले इतनी सादी शादियां हो सकती थी तो अब क्यूँ नहीं

इसका हल है, और हमारे पास ही है

अगर हम चाहते हें कि इस समाज में लड़कियों को भी वही आदर मिले जो लड़कों को मिलता हैतो हमें इन शादी विवाह की परम्पराओं को बदलना होगा और रूढ़ीवाद से बाहर निकलना होगा। अगर हमने इस शादी समारोह को बदल दिया तो सब कुछ बदल जायेगा

1 सब से पहले पढ़ी लिखी कन्या को अपने में स्वभिमान की भावना लानी होगी। जब वह पढ़ी लिखी है, बराबर का कमाती है तो क्यों उसके माता पिता ही खर्चे, यह उसको खुद से पूछना है। वैसे तो जब दोनों लड़का लड़की कमाते हैं तो उन्हें दोनों को अपनी कमाई से ही शादी करनी चाहिये। माता पिता ने पढ़ा दिया यह कम है उन पर शादी का बोझ क्यों डाला जायें। अगर शादी सादे ढंग से करनी पढ़ती है तो सादे से करों। भारत को छोड़कर हर प्रगतीशील देश में शादी बहुत सादे ढ़ंग से की जाती है और कहीं भी माता पिता इस के लिये खर्चा नहीं करते।

2 लड़की के माता पिता को अपनी सोच में फर्क लाना होगा। चाहे एक ही लड़की है और बहुत पैसा है तब भी शादी को देने का या दिखावे का अवसर न बनायें। किसी दवाव में और झुक कर न करें। आप अपनी बेटी को पैसा किसी और रूप में कभी

दे सकते है पर शादी को उसका अवसर न बनायें। जितना आप शादी उत्सव को सादा करेंगे उतनी ही आपकी और आपकी लड़की की इज्जत बड़ेगी।

3 लड़के वाले लड़की वाले के घर बारात ले कर जायेंगे उस परम्परा को खत्म कर एक common place संयुक्त जगह, पर

शादी का आयोजन किया जाये। जहां दोनो महमानों की संख्या तय कर सकते हैं। जिसका खर्च दोनो बांटें। हां कोई यह समझे की उसका समाजिक स्तर बहुत उंचा है और महमान भी अधिक है। तो वह एक अलग से आयोजन कर ले पर लड़की वालों पर किसी तरह का दवाव न डाले। यही ध्यान लड़की वाले भी दें।

4 रिश्तेदारों को कपड़े व दूसरे तोहफे देने की परम्परा खत्म की जाये।

5 माता पिता अगर लड़की को कुछ तोहफे देते हैं तो इस का न प्रर्दशन हो और न ही चर्चा। पर आज की पढ़ी लिखी और कमा रही लड़की को चाहिये कि वह अपने खर्च से ही शादी करे और यही बात लड़के को करनी चाहिये। जब अपनी कमाई से करेंगे तो शादी समारोह अपने आप सादे हो जायेंगे। जब हम अपनी जेब से अपनी कमाई को खर्च करते हैं तो सोच कर ही करते हैं।

6 उस शादी का वहिष्कार करें जहां आपको लगे कि लड़के वालों ने पूरा बोझ लड़की वालों पर डाल दिया है। उस गलत काम में सल्गन न हो।

अच्छी बातें भी हो रही हैं, पर हम उन्हे देखना ही नहीं चाहते।

कुछ समय पहले मुझे मुम्बई गोरेगावं मे एक दक्षिण भारतीय शादी में शामिल होने का अवसर मिला। वर वधु दोनो पढ़े लिखे थे व अच्छे व्यवसायों में कार्यरत थे। उनके माता पिता भी पढ़े लिखे व उंचें पदों पर थे। कई बातें बहुत अच्छी लगी जो मै आपसे share कर रही हूं।

शादी ऐतवार को थी व दिन में 10 बजे से 12 बजे तक थी और उसके बाद दोपहर को खाना था। शादी एक community hall में थी। वर व वधु दोनों के परिवार जन अपनी वेशभूशा धोती में थे, वर व वधु ने भी धोती पहन रखी थी। हमारे यहां की तरह हजारों रू खर्च करके special dress नहीं बनवाई थी। 10 से 12 बजे तक शादी की रस्म पण्डितो द्वारा करवाइ गई जिस में दोनो परिवारों के सदस्य तन्मयता से हिस्सा ले रहे थे, जब की हमारे यहां शादी की रस्म के समय अक्सर रात इतनी हो गई होती है कि अधिकतर घर के सदस्य नीदं में झपकीयां ले रहे होते हैं। शादी की रस्म के समय केवल पानी परोसा जा रहा था, snacks **व** चाट आदी की भरमार नहीं थी। ठीक 1 बजे शाकाहारी भोजन शुरू हुआ, टेबल सिस्टम था पर खाना केले के पत्ते पर परोसा गया। दोनो तरफ के 300 के करीब महमानों ने खाना खाया। स्वभाविक है जब स्नैक्स आदी नही खाए थे तो सब ने भोजन का आन्नद लिया। आते वक्त सभी महमानो को तोफें में मिठाई व गणेश की मूर्ती दी।

जब मैं यहां उत्तरी भारत, खास कर पंजाब,हरियाणा व दिल्ली की शादियों को देखती हूं तो यह मेरे लिए बहुत सुखद बात थी। ऐसे में कयों कोई भ्रूण हत्या के लिये अग्रसर होगा। इस का हल आज की बेटियों के पास ही है।

फोन नं. 9217970381

कल्याणमार्ग के पथिक
श्री योगिंदर पाल कौड़ा हमारे बीच नहीं रहे

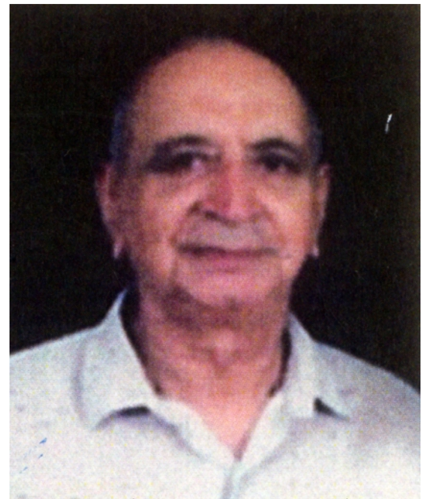

श्री योगिंदर पाल कौड़ा

वैदिक थोटस बहुत दुख के साथ कल्याणमार्ग के पथिक श्री योगिंदर पाल कौड़ा के स्वर्ग सिधारने की सूचना अपने पाठकों को दे रही है। वह 86 वर्ष के थे और अपना सारा जीवन एक सच्चे आर्य समाजी की तरह काटा । श्री योगेन्दर पाल कौड़ा का स्नेह, सहयोग व आर्शीवाद वैदिक थोटस को सदैव मिलता रहा। वह उन चन्द आर्य समाजियों में से थे जो कि अपने पूर्वज आर्यसमाजियों की तरह कल्याणमार्ग के पथिक थे। अन्तिम कार्य भी उनका कल्याण का ही था। उनकी इच्छा के अनुसार उनके परिवार ने उनका शरीर सैक्टर–32 के मैडिकल कालेज को दूसरों के कल्याण के लिये दे दिया। महर्षि दयानन्द बालआश्रम, मोहाली उन्ही का लगाया पोधा है। हमें यह देखकर बहुत प्रसन्नता होती है कि उनके सपुत्र श्री नीरज कौड़ा उन्ही कि तरह कल्याणमार्ग पर चल रहें है। जब पुत्र गुणी होता है तो पिता का नाम मिटा नहीं करता।

वैदिक थोटस उनकी आत्मा की शान्ति के लिये प्रार्थना करते हुये यह उमीद करती है कि बाकी आर्यसमाजी व आर्य समाज उनके जीवन से प्रेरणा लेकर कल्याणकारी मार्ग का रास्ता अपनायेंगें तभी इस सोई हुई संस्था का लोगों को पता लगेगा और अज्ञान के कारण दुखी लोगों का भला आर्य समाज कर सकेगा, जैसा कि 1947 से पहले करता था।

In Everlasting Rememberance

You are the wind that blows,
You're the diamond's glit on the snow,
You're the sunlight on the ripened grain,
You're the gentle autumn's rain.
When awaken in the morning hush,
You're swift uplifting rush
of quite birds in circled light,
You're the soft star that shines in the night,
You're with us,so why to cry;
You're there, you didn't die,
Your memory is a treasure,
You are loved beyond words &
Missed beyond measure.

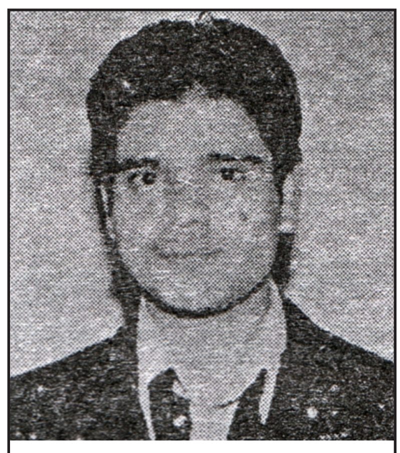

Vishal Batta
14.05.1992 to 09.06.2010

Grief Striken
Grand Parents and parents, relatives and friends,
R.R. Batta and Vijay, Sanjay and Renu, Sudhir and Mira and Mehak
5268/2 Modern Housing Complex, Mani Majra-160101 (UT)
Chandigarh.9814067786,9814879786,8968863786, 2731986

OVERCOMING OBSTACLES

Prof. S P Puri

People are always blaming their circumstances for what they are... I don't believe in circumstances. The people who get on in this world are the people who get up and look for the circumstances they want and if they can't find them, they make them.--George Bernard Shaw

Formulate and stamp indelibly on your mind a mental picture of yourself as succeeding. Hold this picture tenaciously. Never permit it to fade. Your mind will seek to develop the picture. Do not build up obstacles in your imagination.--Norman Vincent Peale

Success is to be measured not so much by the position that one has reached in life but by the obstacles which he has overcome.--Booker T. Washington

The block of granite which is an obstacle in the pathway of the weak becomes a stepping-stone in the pathway of the strong.--Thomas Carlyle

Look skyward; there is no whiteness, since whiteness is imparted to sun's rays only when these are obstructed by the crust of earth. Likewise, life's challenges help us to discover who we are. Good pilots are made by rough weather.

Oyster turns into pearls the sand that annoys it. Thus there will be no pearls if there is no sand. Only when we face obstacles, we discover the timber we are made of. Once we know ourselves, we welcome any challenges like a good general for whom a war is a feast.

If there are no pebbles in the path of the stream, there will be no music. It is the difficulties which empower us to undertake challenging projects. Each one of us is like a spring of infinite strength, coiled up in the human body. We unfold and develop under the social panorama. In reality, life itself is the tendency to develop under the circumstances which tend to press it down.

Nature, when she adds difficulties, adds brains, said Emerson. Two of the three greatest epic poets of the world, Homer and Milton, were stark blind and the third Dante, was nearly so. With this handicap having happened, they could not dissipate their superior genius in any other way but to concentrate in one particular direction. Homer is the author of the Iliad and the Odyssey and is revered as the greatest of Greek epic poets. John Milton was an English poet, man of letters and a civil servant for the Commonwealth of England under Olive Cromwell. He is best known for his epic poem Paradise Lost (1667) written in blank verse. Together with his Paradise Regained, he is considered to be the greatest of English poets. Dante was a major

Italian poet of the middle Ages. His Divine Comedy, originally called Comedia and later called Divina, is widely considered the greatest literary work composed in the Italian language and a masterpiece of world literature.

A person with a strong will power shows himself in action and proves himself in achievement. Cricketer Virender Sehwag willed early in life that he would be another Sachin Tendulkar. The rest was done by action, character and removal of obstacles that hamper success. Both Beethoven, who composed the Ninth Symphony and Helen Keller, who overcame staggering physical handicap, had an aim that was clear and strong. They put their entire self into it and pushed themselves up and on with an overmastering drive. **Tel. 0172-2691442**

मैं सुख को कैसे देखता हूं

अशोक कुमार

शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति हुआ होगा जिसने कभी सम्पूर्ण सुख सदैव भोगा होगा या अनुभव किया होगा। चाहे वह राजा ही क्यों न हो। यह मानव प्रवृति है कि वह सदा से अपने लिए भौतिक सुख संमप्दा की चीजों को एकत्रित करता है। पर वह नहीं जानता कि सुख-संपदा सदा गंगा समान बहने वाली सरिता नहीं है, अस्थायी और क्षशिक हैं।

हर व्यक्ति सुख को अपने हिसाब से आंकता है। कुछ के अनुसार अधिक धन होना, बिना रोक-टोक अधिक धन व्यय करने की क्षमता ही सुख है। कुछ हर प्रकार की सुविधा जिस में शरीर को हर प्रकार का सुख-आन्नद, आराम मिले को सुख मानते हैं। कुछ कहते हैं सफलता का नाम सुख है, कुछ कहते है निडरता, निराशा का लुप्त होना सुख है। एक राजा था जिस ने सुख के लिए केवल ऐसा वरदान मांगा कि जिस वस्तु को र्स्पश करूं वही सोना बन जाए और वही उसका सुख था। परंतु वह सुख बाण शैया था। कुछ कहते हैं साधु, संतों धार्मिक प्रचारकों की शरश, सतसंग में जाना, अर्चना, भक्ति करना ही सुख है। महापुरूर्षो का कहना है मानवता सेवा, दलित वर्ग को उनके अधिकार दिलाना अन्याय को मिटाना सुख है।

अगर अधुनिक युग में सुख को परिभाषित किया जाए तो सुख से अभिप्राय केवल क्षणिक आन्नद, एशर्वीय, भोग , अमोद-प्रमोद, व्यक्तिगत स्वार्थ सिद्धी करना, और इन्द्रीयों को सन्तुष्टि देना ही सुख है सुन्दर भव्य निवास, भ्रमश के लिए वाहन और क्षमता से अधिक धन होना किसी मर्यादा, शिष्टाचार, सामाजिक नियमों का अनुस्रश ना करना पड़े और जीवन में पुरूषार्थ ना हो । सुख प्राप्ति के लिए डांसवार, किटी पार्टियां, कल्ब, होटलों में निमियत रूप से जाना और मंदिरा सेवन, और श्रृंगार पर धन व्यय करना ही सुख समझा जाता है। परन्तु जैसा देखा गया है ऐसा सुख का मार्ग क्षणिक सुख देने वाला है व सदैव रहने वाला नहीं व अक्सर सर्वनाश की ओर ले जाता है। ऐसी सुख सम्पदा निर्माश के लिए भ्रष्टाचार, भ्रष्टसाधन, झूठ, कपट का साहरा लेना पड़ता है। ऐसी सुख संम्पदा की नीव कमजोर और दीमक ग्रस्त होती है। छल कपट, परिश्रम रहित संपदा में उर्जा, सत्यता, पवित्रता नहीं होती और जब कभी ज्वार-भाटा उठता है तो सब कुछ बुलबुना बन जाता है। ऐसे धन से संतोष नहीं सजा मिलती है, गौरव नहीं गरुर बढ़ता है, देव नहीं दानव बनता है, करुणा नहीं कपट पनपता है।

अगर गहराई से देखा जाए तो सुख एक ऐसी स्थति है जिस से व्यक्ति संतोष-शांति, व आन्नद महसूस करता है ।। मेरे ख्याल में अच्छी संतान और स्वास्थय ऐसी चीजें है जो कि उत्तम सुख का साधान है। अगर माता-पिता अपने बच्चों के हाथ में संस्कारों और शिष्टाचार की वीणा पकड़ाएगें तो मानव कल्याणकारी संगीत निकलेगा। अच्छी संतान होगी तो प्रशंसा प्रसिद्धी मिलेगी। ऐसे बच्चे माता-पिता सेवा, पारिवारीक

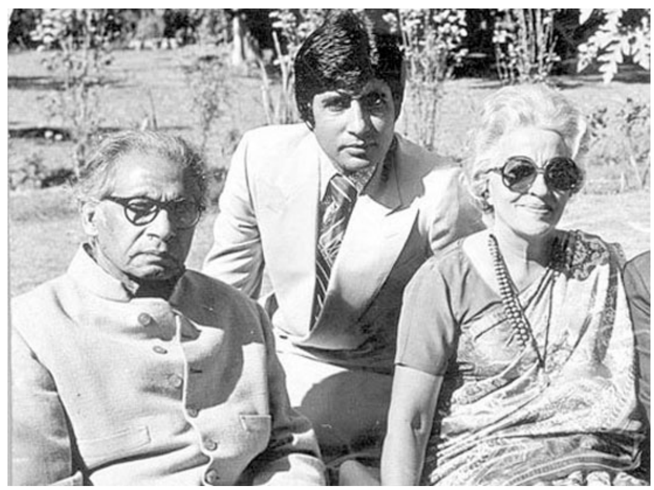

उतरदायित्व निभाऐंगे ही । परिश्रम की कमाई से संतोष फल मिलता है, गंगा जैसा चरित्र रहता है। परन्तु अच्छी संतान तो केवल धर्म, संस्कार, शिष्टाचार और त्याग की शिक्षा से निर्माणित होगी। इसके लिए सत्संग, मंदिर, धार्मिक आयोजनों में जाना होगा। बड़ों, गुरुजनों का आदर करना होगा। मांस-मदिरा से परहेज, सहनशीलता, मधुर शब्दों का प्रयोग करना होगा। काम-क्रोद्ध, लोभ की लालसा प्रदर्शन से हटना होगा। केवल मानव सेवा आधारित धर्म सिखाना होगा और जीवन में उद्देश्यों तक पहुंचनें के लिए नैतिक और आचार नीति के साधान अपनाने की सीख देनी होगी। सादा जीवन उच्च विचार की सोच देनी होगी।

संतान को बुरे आचरणें से मुक्त रखना होगा। नम्रता, जिज्ञासा, सेवा जैसे गुणों से सुशोभित करना होगा। अगर आपकी संतान सत्संगी, धर्मी, मानव कल्याणकारी, आज्ञाकारी है तो आपको निशचित सुख मिलेगा। अच्छी संतान माता पिता को ही नहीं सब को सुख दती है, दूसरों का भी आदर-सत्कार करती है

घर को प्रेम, शांति मंदिर, दुखःसुख वितरण स्थल बनाती है। बदनामी का कारण नहीं बनती, अग्नि, विष बाण नहीं छोड़ती, माता–पिता किसी भी दबाव, आघात से भयभीत नहीं रहते, उन को बेघर, भूखा, तरस, दर्द का जीवन नहीं भोगना पड़ता। वह माता–पिता ही भाग्यशाली है जिन्हें संतान कारण समाज में सिर नहीं झुकाना पड़ता और वही सर्वोतम संतान सुख है।

ऐसे माता पिता को चिंताएं कम होगी, अच्छा स्वास्थय होगा, शारिरीक, मानसिक रोग दूर होंगे। भावी सुरक्षा सुनिश्चित होगी। भक्ति व मानव सेवा के लिए और रचनात्मक कार्यों अवसर मिलेंगे।

सुख के लिये दूसरी चीज है स्वास्थय। अगर स्वास्थय ठीक है तो शरीर हर पदार्थ को स्वीकार करेगा, नही तो शेष जीवन तरस, पश्चाताप की अग्नि में सुलगेगा और अपनी ही संतान समय और साधनों के अभाव स्वरुप मानव–वृद–आश्रमों में पंजीकरण करवा देगी। अन्यथा जीवन की अंतिम बेला में आप अपने ही घर में गैर बन जाओगे इसीलिए अच्छा स्वास्थय होना अनिवार्य है। जीवन बगीया में सुख संपदा का आनंद तभी आता है जब शरीर निरोग और सुंदर हो और सफलता की उंचाईयों का स्पर्श तभी संभव है। अगर आपकी पाचन क्रिया, रक्त संचार नियंत्रित है, हृदय रोग रहित, समस्त अंग क्रियाशील है, तभी हरेक सुख का आनंद आएगा, आलस्ता लुप्त होगी, चुस्ती–फुर्ती, उर्जा, उत्साह प्रदर्शित होगा और चित उदासीन नहीं होगा यदि शरीर स्वस्थय नहीं तो मन स्वस्थ नहीं होगा और परिणाम स्वरूपे विचार भी स्वस्थ नही होंगे। अच्छे स्वास्थ्य में बिना बैसाखियों के अपना भार उठा पाओगे।

वह भौतिक सुख संपदा किस लाभ की, जब आप चल फिर नहीं सकते, खा–पी नहीं सकते, सुन नहीं सकते आपकी संपदा होते हुए भी आप चिकित्सा लाभों से वंचित है और कोई आपका ध्यान नहीं रखता। फिर निर्माणित संपदा का क्या अभिप्राय? इसीलिए प्रभु से अच्छी गुणकारी संतान और स्वास्थय की कामना करनी चाहिए। यही जीवन में श्रेष्ठ सुख हैं। नही तो जीवन का कोई अर्थ नही, जीवन में सन्नाटा रह जाता है, सांस होते हुए शरीर शव बन जाता है, मन मर जाता है, आशाएं ओंस बन जाती है, हृदय हार जाता ह।

उप–आबकारी और कर कमीशनर, सेवा निवृतद्ध, पंजाब। फोन नं. : **98789&22336**

M/S AMMONIA SUPPLY COMPANY

(An ISO 9001-2008 Certified Company)

Joins “ VEDIC THOUGHTS” in its noble Pursuit of spreading 'Moral Values

कैसा होना चाहिये बच्चों से हमारा प्यार

स्वामी विवेकानन्द ने कहा है कि बच्चो के प्रति वही भावना रखें जो कि एक धाय (Mid-wife) की बच्चे के प्रति होती है। वह तुम्हारे बच्चे को गोाद में लेती है, उसे खिलाती है और उसे इस प्रकार प्यार करती है, मानो वह उसी का बच्चा हो।

पर ज्यों ही तुम उसे काम से अलग कर देते हो, त्यों ही वह अपना बोरा–बिस्तर समेट तुरन्त घर छोड़ने को तैयार हो जाती है। उन बच्चों के प्रति उसका जो इतना प्रेम था, उसे वह बिलकुल भूल जाती हैं। एक साधारण धाय को तुम्हारें बच्चों को छोड़कर दूसरे के बच्चों को लेने में तनिक भी दुखः न होगा। तुम भी अपने बच्चों के प्रति वही भाव धारण करो। यदि तुम्हारा ईश्वर में विश्वास है, तो विश्वास करो कि ये सब चीजें, जिन्हें तुम अपना समझते हो, वास्तव में ईश्वर की हैं।

SUPPLIERS OF ANHYDROUS AMMONIA AND LIQUOR AMMONIA

D-4 Industrial Focal Point, Derabassi, District (Mohali) Punjab

Contact:- Rakesh Bhargav, Branch Manager 093161-34239, 01762-652465

Fax 01762-282894. Email- asco.db@ascoindia.com & ascodb@gmail.com

दुर्घटना ही नहीं रोडरेज (सड़क पर क्रोद्ध से आगबवूले हो जाना) से बचना भी ज़रूरी है

(रोड रेज से बचने के लिए ज़रूरी है विशाल हृदयता व मानसिकता में सकारात्मक परिवर्तन)

एक विवाह में शामिल हाने के बाद रात को घर लौट रहे थे। सड़कों पर भीड़–भाड़ भी नहीं थी। रास्ते में एक जगह पुलिस वाहनों की जाँच कर रही थी विशेष रूप से कमर्शियल वाहनों की। अचानक पुलिस के एक कॉन्स्टेबल ने हमारी गाड़ी से आगे चल रही गाड़ी को रुकने का इशारा किया। अगली गाड़ी के ड्राइवर ने गाड़ी को धीमा किये बग़ैर ही ज़ोर से ब्रेक मारकर गाड़ी वहीं की वहीं रोक दी। हमारी गाड़ी अगली गाड़ी से टकरा गई। गाड़ी मेरा बेटा चला रहा था। इसे एक दुर्घटना ही समझिए और इस दुर्घटना से दोनों ही गाड़ियों में थोड़ा–बहुत नुकसान भी हुआ। अगली गाड़ी में बैठे लोग उतरकर बाहर आए और हालात का जायज़ा लेने लगे।

सही अर्थों में वो लोग हालात की बजाए हमारा जायज़ा ले रहे थे कि हम कितने कमज़ोर या ताक़तवर हैं। हम सब भी गाड़ी से बाहर निकल आए। इससे पहले कि वो लोग कुछ कहते मैंने ही हाथ जोड़कर कहा, ''भाई साहब ग़लती हमारी है।'' और फिर पूछा कि किसी को कुछ चोट–वोट तो नहीं लगी? ''चोट–वोट तो नहीं लगी लेकिन गाड़ी का तो कबाड़ा हो गया, '' एक सज्जन ने ज़रा बनावटी गुस्सा प्रकट करते हुए कहा। ''भाई साहब हमने कोई जान–बूझकर तो टकराई नहीं। आपने एकदम ज़ोर से ब्रेक मार दिये और हम संभल नहीं पाए। फिर भी हम अपनी ग़लती मान रहे हैं,'' मैंने विनम्रतापूर्वक कहा। ''ग़लती मान रहे हो तो इसका जो डैमेज हुआ है दे दो,'' उन सज्जन ने बेरुख़ी से कहा।

जो व्यक्ति गाड़ी ड्राइव कर रहा था उसने गााड़ी का निरीक्षण करके कहा कि कम से कम दो हज़ार रुपये लगेंगे इसके डेंट ठीक करवाने में। हमारी गाड़ी ज़्यादा डैमेज हुई थी लेकिन उसमें उनका कोई दोश नहीं था। दूसरी गाड़ी एक बारह–पंद्रह साल पुरानी मारुती वैन थी जिसमें मुश्किल से दो सौ रुपये का डैमेज हुआ होगा। ''वैसे गाड़ी तो हमारी भी डैमेज हुई है भाई साहब, '' मैंने पुनः अत्यंत विनम्रतापूर्वक कहा। ''तो फिर ठीक है पुलिस को बुला लेते हैं,'' भाई साहब ने कहा। भाई साहब कई बार पुलिस को बुलाने की धमकी दे चुके थे।

जिन की ग़फ़लत से ये दुर्घटना हुई थी उन्हें इससे कोई मतलब नहीं था। वे अपनी कमर्शियल वाहनों की जाँच में मस्रूफ़ थे। इस दौरान मेरे छोटे भाई ने अपनी जेब से कुछ पैसे निकाले और उनके हवाले कर दिये। उन्होंने कहा कि इतने से क्या होगा? मेरे छोटे भाई ने कहा कि हम न तो आपको किसी तरह का हर्ज़ाना दे सकते हैं और न ही आपको जो कश्ट हुआ है उसकी क्षतिपूर्ति ही कर सकते हैं। बस असावधानीवश जो ग़लती हो गई है उसके लिए क्षमा कर दीजिए। ख़ैर मामला किसी तरह सुलट गया और हम सब सकुशल घर लौट आए।

दुर्घटना स्वाभाविक है लेकिन कभी–कभी इसके अत्यंत भयंकर परिणाम होते हैं। कई बार दुर्घटना में आर्थिक नुक़सान तो नाम मात्र का होता है लेकिन दुर्घटना के उपरांत सड़क पर उत्पन्न गुस्से अथवा रोडरेज के कारण स्थिति गंभीर और घातक हो जाती है। रोडरेज के कारण न जाने

कितने लोगों को अपनी जान तक से हाथ धोना पड़ा है। गाली–गलौज और मार–पिटाई तो सामान्य सी बात है। अतः रोडरेज से बचाव बेहद ज़रूरी है। रोडरेज से बचने के लिए ज़रूरी हैः

अत्यंत सावधानीपूर्वक गाड़ी चलाएँ।

ट्रैफिक के नियमों का पालन करें।

यदि दूसरे की ग़लती है तो भी उसे सामान्य रूप में लें।

दुर्घटना की स्थिति में धैर्य न खोएँ।

गाड़ी से ज़्यादा व्यक्ति की जान महत्त्वपूर्ण है। यदि किसी से आप की गाड़ी में नुक़सान हो भी गया है तो इसका ये अर्थ तो नहीं कि आप उसकी जान ही ले लें। वैसे भी किसी की जान लेने का क्या परिणाम होता है आप जानते ही होंगे।

दुर्घटना की स्थिति में सबसे पहले ये देखें कि किसी को चोट तो नहीं लगी है। यदि किसी को चोट लगी है तो सबसे पहले उसकी चिकित्सा की ओर ध्यान दें। जो लोग आपसे आगे निकलना चाहते हैं उनको आगे जाने का रास्ता दे दें चाहे वे ग़लत ही क्यों न हों। इससे आप ज़्यादा सुरक्षित हो जाएँगे और तनावरहित होकर गाड़ी चला सकेंगे।

हमारे यहाँ ट्रैफिक की हालत को देखते हुए गाडियों में खरोंच या छोटा–मोटा डेंट पड़ जाना स्वाभाविक है, इन छोटी–मोटी बातों की परवाह न करें। कई बार ग़लती हमारी ही होती है जिसकी वजह से हमारी गाड़ी क्षतिग्रस्त हो जाती है लेकिन फिर भी हम दोशारोपण दूसरों पर ही करते हैं जो सरासर ग़लत है। कई बार कुछ लोग किसी की ग़लती से हुई छोटी–मोटी खरोंच या डेंट के लिए न केवल दूसरे व्यक्ति को बुरा–भला कहते हैं अपितु क्षतिपूर्ति के रूप में हज़ारों रुपये की माँग भी करते हैं जो किसी भी तरह से उचित नहीं। कुछ लोग दूसरों से तो हर्ज़ाना ले लेते हैं लेकिन आप कभी किसी को एक पैसा भी नहीं देंगे इसके लिए चाहे उन्हें कितना ही गिड़गिड़ाना पड़े या नाक रगड़नी पड़े।

कई बार किसी दुर्घटना में कोई भी स्पश्ट रूप से दोशी नहीं होता अतः एक दूसरे पर दोशारोपण करना बेमानी है। अपनी ग़लती है तो उसे स्वीकार करें। मामले को बातचीत द्वारा ही सुलझाने की कोशिश करें। गलती चाहे किसी की भी हो लेकिन किसी दुर्घटना के बाद यदि आप सही सलामत हैं तो क्या ये किसी क्षतिपूर्ति से कम है।

जिन लोगों में तनिक भी मानसिक धैर्य और आर्थिक बर्दाश्त का माद्दा नहीं है वे किसी भी तरह गाड़ी डिजर्व नहीं करते। ऐंठ नवाब की और औक़ात भिखारी की। हर चीज़ के साथ नफ़ा–नुक्सान तो जुड़ा ही रहता है। गाड़ी चलाते हैं तो गाड़ी के अनुरूप औक़ात और स्टेटस भी ज़रूरी रखें।

एक पुरानी घटना याद आ रही है। मैं अपने एक मित्र के साथ पूना शहर से पूना एयरपोर्ट की तरफ जा रहा था। हम जिस ऑटो में बैठे थे वो जैसे ही एक कार की बराबर से गुज़रा कार का बंपर ऑटो में उलझकर अलग हो गया। कार ड्राइवर चला रहा था। ड्राइवर ने ऑटो रुकवा लिया और ऑटो वाले से नुक़सान के पैसे माँगने लगा। नुक़सान वास्तव में कुछ विशेष हुआ ही नहीं था। एक पुलिस वाले ने आकर कहा कि एक तरफ होकर अपना फैसला कर लो और कार व ऑटो दोनों को साइड में खड़ा करवा दिया।

हमें भी एयरपोर्ट पहुँचने की जल्दी थी। हम दूसरा ऑटो ले सकते थे लेकिन मैं ऑटो से उतरकर कार में बैठे कार के मालिक के पास गया और उससे कहा, '' सर हमें एयरपोर्ट पहुँचने की जल्दी है। आप ऑटो वाले को जाने दें तो बड़ी मेहरबानी होगी। वैसे भी आप बाहैसियत आदमी हैं ऑटो वाले से क्या सो–पचास रुपये लेंगे।'' उन सज्जन ने कहा, '' ठीक है आप लोग जाइये'' और अपने ड्राइवर को बुला लिया।

आप न केवल रोडरेज की विभीशिका से स्वयं बचने का प्रयास करें अपितु अन्यत्र जहाँ भी ऐसी स्थिति उत्पन्न हो गई हो वहाँ भी ईमानदारी से मध्यस्थता करने का प्रयास करें ताकि कोई भयावह स्थिति उत्पन्न न हो। तटस्थ नहीं जिम्मेदार नागरिक ही प्रभावशाली व्यक्तित्व का स्वामी होता है।

सीताराम गुप्ता, ए.डी. 106–सी, पीतमपुरा, दिल्ली–110034
फोन नं. 09555622323

संग्रम सिंह अपने आचरण द्वारा गाय के दूध का व शाकाहारी भोजन का प्रचार करते है।

संग्रम सिंह जो कि अभिनेता होने के साथ पहलवान भी हैं, अपने आचरण द्वारा गाय के दूध का व शाकाहारी भोजन का प्रचार करते है। उनकी यह आदत इतनी मशहूर हो गई है कि जब वह किसी होटल में जातें हैं तो वेटर बिना पूछे ही दूध का गिलास ले आते है। उन्होने दिल्ली में 500 गाय की गउशाला बनाने का संकल्प लिया है। यही नहीं वह अपना उदाहरण देकर शाकाहारी भोजन का भी प्रचार करते है।

No pain, no gain

My daughter had a break after her exams. I decided to take her to Fatehpur & Sikri near Agra and booked our berths by Chhatisgarh Express that leaves Ambala at 10.20 in the night and touches Agra at 8.AM., enabling one to spend full day for sight seeing in Agra.

As we reached the Station, for a minute, our entire plan appeared going awry since the train was reported to be late by six hours with expected arrival at 4.10AM. We sat down to weigh various options. "I think even if the train leaves at 4.AM, we will be in Agra by 2 PM. We can use the day to visit Taj and the Fort and next day we can visit Fatehpur& Sikri" wife poured her wisdom. That looked to be the only option to save the tour, so we decided to relax in the Waiting hall. It was already 3.20 A.M when the shrill of mobile buzzer awakened me from somnolent wakefulness. I rushed to know the fresh status of the train.

Situation had worsened. Now the expected time was 6.30AM. "No point spending entire day in the train, better look for other option" I thought to myself. The Board displaying arrival and departure of trains caught my attention and I could see Heera Kund Express from Amritsar to Vishakapatnam, arriving at 4.20 AM. I gingerly entered the TC's room to share my new plan. Luckily TCs were very courteous. "Sir, what you've decided is the best option. Heera Kund will reach Agra at 12.00 hrs. Moreover, you'll get full refund for the tickets. But, then you need berths since entering in to an unreserved compartment is not your cup of tea as these are badly crowded." one of them said.

His advice sent me in to thinking mode but then one of the TCs walked an extra mile to help us. "Sir, it is not the time to ponder. Go and cancel these tickets and get general class tickets. In the meanwhile I'll talk to the TT on the train." With in 10 minutes we were there with our luggage "Sir, I've checked. You should be able to get berths. You can talk to the TT about his charges in the train itself but it should not be more than Rs 300 per berth, which is quite reasonable also. Yes, I can send my man with you to platform No 6 where the train will come" he said. As we were moving to platform No 6, I felt greatly amused with two findings, first whether NDA or UPA, Prabhu or Bansal, corruption down the line remains unaffected, second, a section of privileged govt. employees continue to have a ferocious sense of entitlement for extra booty..

मनुष्य जीवन बड़ी मुश्किल से मिलता है। बेईमानी से कमाये लाख रूप्ये से ईमानदारी का एक पैसा ज्यादा कीमती है। मेरा यह मानना हे कि रिश्वत लेने वाला अफसर, भिखारी से भी नीचे है रिश्वत मीठा जहर है, लेकिन इस जहर की गिरफत में आने वाले व्यक्ति को शायद यह नहीं मालूम कि इसका असर उसकी आने वरली पीड़ीयों पर पड़ेगा।

जसटिस श्री प्रीतम पाल जी
लोकायुक्त हरियाण व एक समर्पित आर्यसमाजी

As the train ambled along, almost empty unreserved compartments caught my attention. We got in to the specified reserved bogey to find about 10 passengers with beseeching expressions, waiting for berth to be allotted. Not the one who'd pay bribe, I saw no sense in wasting time and we hurriedly got down to get in to the adjoining unreserved compartment. There was enough room to lie down and soon we slipped in to slumber. Train was at Mathura station when a new entrant nudged to seek room for himself.

Happy to have recovered the lost ground, now we were chatting and naturally the nightmare of the previous night was the center point. I saw an opportunity to give a piece of advice to my daughter, "My child, alone Govt. can not eradicate corruption. We as citizens have also a role to play. The common man who waxes eloquently about the dishonesty of politicians, bureaucracy and the system at large seldom realises that he too constitutes and contributes to the big, bad ugly society that we are talking about. It is clearly the case of the pot calling the kettle black! Each one of us is most definitely contributing to the mayhem. We need to take a firm resolve to not pay bribes; come what may. No doubt, it calls for putting up with some discomfort like standing in queue, but then they say "No pain, no gain". Charity begins at home when we aspire to clean up the Aegean stables." **Tel. 0172-2662870**

जो लोग किसी उदेश्य को ले कर चलते हैं, आयु भी उनको पकड़ने में असफल रहती है।

हम में अधिक तो यह मान कर चलते हैं कि अब मैं रिटायर हो गया हूं , बूढ़ा हो गया हूं, अब मुझे पैशंन या वची हुई पूंजी का वैठ कर भोग करना है। कमाना किस लिये, जीवन भर कमाता ही तो रहा।

पर बहुत से ऐसे व्यक्ति हैं जो कि 60 साल के बाद के समय को महत्वपूर्ण मानकर अपने जीवन को एक नया मोड़ दे देते हैं और वह उतने ही व्यस्त रहते हैं जैसे कि पहले थे। सिर्फ फर्क इतना होता है कि पहले जहां परिवार, मकान, बच्चों का पालन पो**षण**, अपने भवि**ष्य** के लिये बचाना मुख्य उदेश्य होते थे । अब वह बड़े उदेश्यों के लिये काम करना शुरू कर देते हैं जिसमें कि समाज, देश, छोटे तवके की भलाई हो या यूं कहें कि जहां पहले मुख्य त्वजो अपनी या अपने परिवार की भलाई थी अब उसका स्थान नि**ष्काम** सेवा ले लेती है।

आज बहुत से ऐसे राजनितिझ, समाज सेवी हैं जो कि 80 से उपर होने पर भी मन में कुछ करने के सपने लेकर लगे हुये हैं। उन में कुछ करने की धुन इतनी सशक्त है कि उन्हें अपनी बिमारी, घर वालों का भी ध्यान नहीं रहता। यह सत्य है जब आपके सामने एक उदेश्य होता है तो उत्साह और काम करने की श्शक्ति दुगनी हो जाती है। यह चीज व्यक्ति की आयु को बड़ा देती है।जब कि बिना कर्म या सपनों के व्यक्ति सब कुछ होते हुये भी बहुत बार निराश अनुभव करता है , उसे जमाने से शिकायते ही होती है, अपने सगे सम्बन्धियों से शिकायत रहती है।मन अपेक्षाओं और रोश से भरा होता है जो कि बहुत सी श्शारिरक और मानसिक बिमारियों को जन्म देता है। आप ने देखा होगा कि जिस दिन आपको कोई खास काम होता है, आपके शरीर के अंग और इद्रिया दुगनी रफजार से काम करते हैं पर जब कोई काम नहीं होता तो सुस्त बैड़े रहते हैं और छुपी हुई बिमारियां भी ध्यान खींचती है। यह इय बात को बताता है कि कोई भी उदेश्य या कुछ करने की इच्छा हमें सवसथ और प्रसन्न रखती हैं

A NEW AGE: 'Traffic Ramaswamy', 82, in action on the roads of Chennai

अभी तामिलनानाडू प्रान्त में एक संस्था ने एक सर्वे किया जो कि इस बात की पुष्टि करता है। श्री रामासवामी की आयु 82 वर्ष है और उन्होने जो काम पकड़ा हुआ है वह सब को हैरान कर सकता है। वह नियम के खिलाफ जो भी विज्ञापन लगाये जाते हैं उनको अपने साथियों के साथ जा कर हटा देते हैं और शहर के सोंदर्य को बनाये रखने में लगे हुये हैं। श्री रामासवामी जो चीज भी अवैध है उनका सड़क पर उतर कर विरोध करते है। उनकी शक्ति का आप इस बात से अन्दाजा लगा सकते है, कि सरकार ने किसी बात को लेकर उन्हें जेल में डाल दिया, बाहर आते ही, वह घर नहीं गये अपितु फिर अपना अन्दोलन ,ुरू कर दिया। इसी तरह एक पुराने कांग्रेसी कुमारी अनाथन जो कि 83 वर्ष की है, श्शराब पर प्रतिबन्ध लगाने के अनदोलन में अगुआ हैं। कमयुनिस्ट पार्टी केनलाकानू 90 वर्ष की आयु में अवैध खनिजीकरण के विरूध अन्दोलन के नेता है। हम सभी जानते हैं डी ऐम के के नेता करूणानिधी 90 साल के हैं तो उसी पार्टी के जरनत सैक्टरी अनवाजागन 92 साल पूरे कर चुके है।

सेवानिवृत ऐयर मार्शल रण्धीर सिंह

ऐसे व्यक्ति हर जगह हैं। यहां हम बात कर रहें हैं सेवानिवृत ऐयर मार्शल रण्धीर सिंह की जो कि चंडीगड़ में ही रहते हैं। वह 93 व**र्ष की आयु में** खुद कार चलाकर समाजिक कार्यों के लिये बिभिन्न दफतरों में जातें है। यही नहीं उन्होने संगरूर में एक गांव भसाउर को अपनाया हुआ है और उसके सेधार में लगे हुये हैं। उन्होने गांव में पार्क और विद्याालय बनाया है। उनका कहना है––सेवा निवृति के बाद लोग अलग अलग ढंग से जीवन जीते हैं पर मेरा मानना है कि जिन्हें हम जानते नही उनकी सेवा करना सब से उतम काम है।

हरियाणा के लोकायुक्त श्री प्रीतम पाल जी इतने उचें और जिम्मेवारी वाले ओहदे पर काम करते हुये भी, जन कल्याण के कार्यों के लिये बहुत समय और पैसा देते है। अस्पताल में खाना पहुचाते हैं, कुरूक्षेत्र के पास एक गांव में ,ुवक चेतना के कार्य में लगें है। ऐसे व्यक्ति जीवन में सेवानिवृत नहीं होते हां उनके कार्य क्षेत्र बदल जीतें हैं। परिवार का दायरा बदल जाता है। उदेश्य बड़े हो जाते है। इन लोगों के जीवन सब के लिये प्रेरणा है। यही असली यज्ञ होते है।

किस्सा जगमाई का

1947 में जब भारत का विभाजन हुआ तो लाहोर शहर के गुमती बाजार में सब हिन्दु परिवार, बाकी शहर के हिन्दुओं की तरह, वहां से आ कर भारत में बस गये । उन में एक सुनयारों का परिवार भी था वह भी बाकी हिन्दुओं की तरह भारत को पलायन कर गये पर उनकी जो मां थी उस ने उन ने के साथ भारत आने से मना कर दिया और वह वहां अपने घर में ही जमी रही। जो मुसलमान भारत से गये थे वे हिन्दुओं के खाली घरों पर कब्जा कर रहे थे क्योंकि वे भी वहां रिफयूजियों की हालत में पहुंचे थे। वह बुढ़िया इतनी वड़ी हवेली में अकेले ही रहती थी। एक दिन एक मुसलमान रिफयूजी ने जो कि उस मकान में अपने परिवार के साथ आना चाहता था उस से कहा––तुम लाला लाजपत भवन में जो हिन्दुओं का रिफयूजी कैम्प है वहां चली जाओ, वहां के संचालक तुम्हें हिन्दुस्तान भिजवाने का बन्दोबस्त कर देंगें। यहां सन्तान के बिना रहकर क्या करोगी? (यहां यह बताना आवश्यक है कि लाला अंचित राम ने जो कि लाला लाजपतराय द्वारा 1921 में बनाई Servants of the people's society **के मैम्बर थे व भारत के भूतपूर्व उप राष्ट्**रपति स्व कृष्ण कान्त के पिता थे, ने अपनी जान की परवाह किये बिना मार्च 1948 तक हिन्दुओं की सहायता के लिये यह कैम्प चलाया।)

उस मुसलमान रिफयुजी की बात सुन कर उस हिन्दु औरत ने तड़ाक से उत्तर दिया––यह मेरा घर है। मैं इस को छोड़कर क्यों जांउ। और वह वहीं रहती रही। उस के पास अनाज था वह अपना खाना पका कर अपना बसर करती रही। कुछ दिन बाद दिपावली का उत्सब आया तो उसने अपने घर के बाहर दीप जलाकर पर्व को मनाया और घर में ही मिठाई बनाकर अड़ेस पड़ोस में बांटी। घीरे घीरे वहां के लोगों का उस के प्रति द्वे**ष खत्म होने लगा और** वे उससे बात चीत करने लगे।

वह जब भी पड़ोस में कोई बिमार होता वह न केबल हाल पूछती पर उसके घर जाकर उसकी सेवा करती। हाल यह हो गया कि जिस किसी के घर भी उस का पैर पड़ता उस के यहां शुभ ही शुभ होता। और धीरे धीरे उसका यह यश गुमती से लेकर सयाद मिथा तक फैल गया और लोग उसे जगमाई के नाम से जानने लगे। अब वह बहुत बूढ़ी हो रही थी पर वहां के लोग उसके खाने का पूरा ख्याल रखते, और उसको किसी भी तरह की तकलीफ नहीं आने देते और न हीं अकेलापन महसूस होने देते। 1962 में वह स्वर्ग सिधार गई तो बात उसका अन्तिम क्रिया कर्म करने की आई। क्योंकि लाहोर में हिन्दु तो अब थे नहीं इसलिये जो वहां कि शमशान भूमी रामू दा बाग वह तो बन्द हो गई थी, तो लोगों ने सोचा उस को मुसलमानों के कबरिस्तान में ही दफना देते है। पर वहां के मोलवी ने कहा कि वह हिन्दु थी व हिन्दु के रूप में मरी है इस लिये उसका हिन्दु ढंग से ही अन्तिम संसकार होगा। उस के मृतक शरीर को रावि के किनारे ले गये और उसके पड़ोसियों ने उसके शरीर को अग्नि दी। तीसरे दिन उसकी अस्थियां रावी नदी में ही वहा दी गई। उस का घर बन्द ही रखा गया। 1970 में जब ढह गया तो उस की निलामी कर दी गई।

प्रकाश औषधालय

थोक व परचून विक्रेता हमदर्द, डाबर, वैद्यनाथ, गुरूकुल, कांगडी, कामधेनु जल व अन्य आर्युवैदिक व युनानी दवाईयाँ

Wholesaler & Retailer of :
HAMDARD, DABUR, BAIDHYANATH,
GURUKUL KANGRI, KAMDHENU JAL
& All kinds of Ayurvedic & Unani Medicines
Booth No. 65, Sec. 20-D, Chandigarh
Tel.: 0172-2708497

हमारे आर्य समाज यह कर के भी देखे

भारतेन्दु सूद

आज हमारे आर्य समाजो को तीन श्रेणियों में बांटा जा सकता है। पहली श्रेणी में वे आते हैं जिन के पास अच्छे भवन आदि हैं और उन भवनों से अच्छी कमाई भी है। वे उस कमाई का कुछ भाग प्रचार के नाम पर दूर दरार से प्रचारकों को बुलाकर मोटी दक्षिणा देने में खर्च कर देते हैं और कुछ पैसा जो कुछ आर्य समाजी रह गये हैं उनके लिये अच्छे प्रिती भोज कर देतें हैं। पर फायदा कुछ नहीं होता, ऐक भी नया व्यक्ति आर्य समाजी नहीं बनता वल्कि जो आ रहे होते है उन की संख्या भी तेजी से कम हो रही है।

कारण हम अपने प्रचारकों द्वारा जो परोस रहे हैं उन को आज के प्रगतीशील समाज में लेने वाला कोई नहीं। हाल यह है कि इन प्रचारको व आर्य समाज के अधिकारियों के अपने बच्चे भी उस को मान कर राजी नहीं। सच्चाई यह है कि यह आर्य समाज की विचारधारा है ही नहीं यह तो इन गुरूकुलों की विचारधारा है जो कि आर्य समाज से कोसों दूर है। न हमारे बच्चे धर्म को समझने के लिये संस्कृत ही पढ़ेंगे न ही हवन करेंगे। धर्म को समझने के लिये दूसरे बहुत साधन है इस झंझट में क्यों पढ़ना, जो कि इन गुरूकुलों का अपनी कमाई के लिये ऐजेंडा हैं।

तो क्यों न हम अपना तरिका बदलें। जो हम कर रहें है उस के स्थान पर हम अपने से कमजोर वर्ग के कल्याण पर धन खर्चे। जब भी कोई पर्व हो, नजदीक के अस्पताल में 200 पैकेट भोजन के पहुंचा दें। जैसे कि जब स्वामी दयानन्द , महात्मा हंसराज या फिर स्वामी श्रद्धानन्द का जन्म दिवस हो हर एक आर्य समाज अपने तौर पर पास के अस्पताल में भोजन की व्यवस्था करें। इसी तरह अपने इन बड़े बड़ हालों में जो दूर दरार से रोगियों के साथ आते है उनको रहने का स्थान दें। गरीब वच्चों के लिये **Coaching classes** लगाओ। तारिके बहुत है। मैं विश्वास के साथ कह सकता हूं लोग आर्य समाज की तरफ फिर झुके आयेंगे।

इन गुरूकुल के संस्कृत भाषियों पर पैसे खर्चना बन्द करो और स्वयं आर्य समाज का प्रचार, साधारण लोंगों की भाषा में , आर्य समाज के नियमों को बता कर करें। प्रिती भोजों के स्थान पर साधारण लंगर करो। कम से कम लोग अपनी पलेट तो धोयें। कहने का अभिप्राय यह है कि हमारे धन का मुख्य भाग कल्याण के लिये जायें। जो पदाधिकारी 70 साल से उपर हैं वह पद छोड़ देंगे तो आर्य समाज का बहुत भला होगा। क्योंकि अब वह बदल नहीं सकते। युवा लोग तभी आगे आयेंगे जब वह स्थान रिक्त करेंगे। सत्संग में 10 व्यक्ति होते हैं पदाधिकारियों की संख्या 50 होती है।

दूसरे आर्य समाज वे हैं जिनको आये नहीं पर श्रधालु अपने तरफ से पैसे ऐकत्रित कर यह सब करते हैं। उनको भी यह सब छोड़ कर स्थानिय लोगों के कल्याण पर ही लगना चाहिये औ जो कुछ प्रचार के लिये स्वयं कर सकते हैं करें।

तीसरे आर्य समाज जो बन्द हो गये हैं उन्हें आर्य विद्यालयों में बदलें। जिन लोगों ने इन भवनों के लिये कभी दान दिया जमीन दी उन की भावनाओं का सम्मान तभी होगा जब कोइ अच्छा कल्याण का कार्य इन भवनों में होगा। आज के समय में कमजोर वर्ग को शिक्षा पहुंचाने से अच्छा कोई काम नहीं। सप्ताहमें एक बार सत्संग तो तब भी कर सकते है, कोइ नहीं रोकेगा।

फोन नं. : 0172–2662870

एन एस आई सी

NSIC

ISO 9001-2008

www.nsic.co.in

NSIC SCHEMES FOR THE DEVELOPMENT OF SMALL ENTERPRISES

- कच्चा माल खरीद के लिए वित्तिय सहायता
- बैंका के माध्यम से ऋण सहायता
- विपणन सम्बधी सूचना सेवाएं
- इनफोमीडियरी सेवाएं
- कच्चे माल का वितरण
- परियोजनाओं और उत्पादों का निर्यात
- सरकारी भण्डार खरीद कार्यक्रम के अन्तर्गत एकल बिन्दु पंजीकरण
- प्रदशनियां एवं व्यापार मेले

राष्ट्रीय लघु उद्योग निगम लिमिटेड

(भारत सरकार का उद्यम)

एस.सी.ओ. 378, द्वितीय तल, सैक्टर 32 डी, चण्डीगढ़ – 160030

फोन : 0172–2620538, 2620539

रजि. नं. : 4262/12

।। ओ३म्।।

फोन : 94170-44481, 95010-84671

महर्षि दयानन्द बाल आश्रम

मुख्य कार्यालय -1781, फेज़ 3बी-2, सैक्टर-60, मोहाली, चंडीगड़ - 160059
शाखा कार्यालय - 681, सैक्टर-4, नज़दीक गुरुद्वारा, मुंडीखरड़-मोहाली
आर्य समाज मंदिर, चंडीगढ़ व पंचकुला
E-mail : dayanandashram@yahoo.com, Website : www.dayanandbalashram.org

शास्त्र कहते हैं धन दौलत ऐश्वर्य तभी तक मित्र रहते हैं जब तक व्यक्ति स्वस्थ है। पत्नि और सगे सम्बन्धियों का साथ श्मशान भूमि तक ही रहता है । जो हमारे साथ जातें हैं वे हैं हमारे अच्छे कर्म, और खास कर दूसरों के कल्याण के लिये किये गये कर्म।

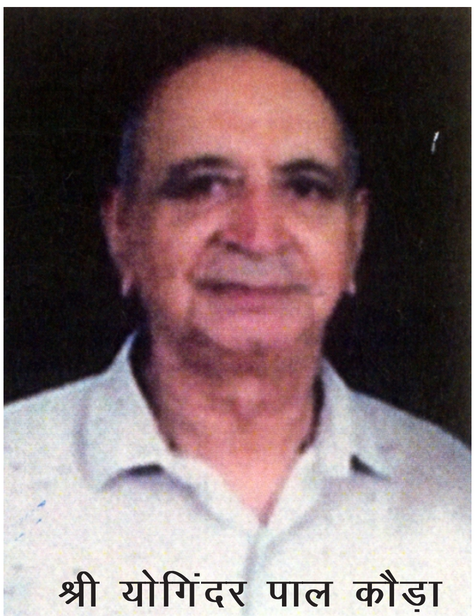

श्री योगिंदर पाल कौड़ा

महर्षि दयानन्द बाल आश्रम से जुड़े सभी, श्री योगिंदर पाल कौड़ा, जिन्होने इस आश्रम का पोधा लगाया था और उस के बाद तन, मन और धन से इसका संरक्षण कर रहें थे, के निधन पर भावभिनी श्रधांजली अर्पित करता है और उनकी आत्मा की शान्ति के लिये ईश्वर से प्रार्थना करते हैं।

इम इस मौके पर आपको विश्वास दिलाना चाहते हैं कि हम उन के द्वारा प्रश्सत मार्ग पर चलते हुये महर्षि दयानन्द बाल आश्रम को उनके सपनों की संस्था बनानें में कोइ कसर नहीं छोड़ेंगे। बहुत सारे व्यक्तियों के संवेदना संदेश आये हैं, हम उनका धन्यवाद करते है।

धार्मिक माता/पिता 2100 प्रति माह	धार्मिक सखा 500 प्रति माह
धार्मिक बहन/भाई 1500 प्रति माह	धार्मिक सहयोगी 100 प्रति माह
धार्मिक बन्धु 1000 प्रति माह	धार्मिक साथी 50 प्रति माह

आप आर्थिक सहयोग देकर भी पुण्य के भागी बन सकते है् :-

A/c No. : 32434144307
Bank : SBI
IFSC Code : SBIN0001828

नरेन्द्र गुप्ता

लेखराम (+91 7589219746)

स्वर्गीय
श्रीमती शारदा देवी
सूद

स्वर्गीय
डॉ0 भूपेन्दर नाथ गुप्त
सूद

निमार्ण के 63 वर्ष

गैस ऐसीडिटी शिमला का मशहूर कामधेनु जल

(एक अनोखी आर्युवैदिक दवाई मुख्य स्थान जहां उपलब्ध है)

Chandigarh-2691964, 5076448, 2615360, 2700987, 2708497, Manimajra-2739682, Panchkula 2580109, 2579090, 2571016, Mohali-2273123, 2212409, 2232276, Zirakpur-295108, Shimla- 2655644, Delhi-23344469, 27325636, 47041705, 27381489,Yamunanagar-232063, Dehradoon-2712022, Bhopal-2550773, 9425302317, Jaipur-2318554, Raipur-9425507000, Lucknow-2683019, Ranchi-09431941764, Guwhati-09864785009, 2634006, Meerut- 8923638010, Bikaner-2521148, Batala-240903, Gwaliyar-2332483, Surat-2490151, Jammu-2542205m, Gajiabad-2834062, Noida-2527981, Nagpur-9422108322, Ludhiana-2741889, 9915312526, Amritsar-2558543, Jallandhar-2227877, Ambala Cantt-4002178, Panipat-4006838, Agra-0941239552, Patiala-2360925, Bhatinda-2255790

Medicine is available in other places also, Please contact us to know the name of the shop/dealer.

शारदा फारमासियुटिकलज मकान 231ए सैक्टर 45–ए चण्डीगढ़ 160047

0172-2662870, 92179 70381, E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

जिन महानुभावो ने बाल आश्रम के लिए दान दिया

Sh. R.D. Rishi

Sh. Rakesh Soni

Sh. Rajesh Garg

Nirupma

Neha Soni

आप ने आश्रम के बच्चे
कृष्ण का PGI में
आपरेशन का पूरा खर्चा दिया

RNI NO. CHABIL/2012/47744 POSTAL REGN. NO. G/CHD/0154/2013-2015

मजबूती में बे–मिसाल

घर का निर्माण डीप्लास्ट के साथ

40 years
in service

DIPLAST
PLASTICS LIMITED
AN ISO 9001 COMPANY

C-36, Industrial Phase 2, S.A.S. Nagar, Mohali (Pb.) India
Phone : +91-172-2272942, 5098187, Fax : +91-172-2225224
E-mail : diplastplastic@yahoo.com, Web : www.diplast.com

QUALITY IS OUR STRENGTH

विज्ञापन / Advertisement

यह पत्रिका शिक्षित वर्ग के पास जाती है आप उपयुक्त वर–वधु की तलाश, प्रियजनों को श्रद्धा सुमन, अपने व्यापार को आगे ले जाने के लिये शुभ–अशुभ सूचना विज्ञापन द्वारा दे सकते है।

Half Page Rs. 250/- Full Page Rs. 500/- 75 words Rs. 100

Contact : Bhartendu Sood 231, Sector 45-A, Chandigarh
9217970381 and 0172-2662870